अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज: फेकल्टी अधूरी, दाखिलों की स्वीकृति मिली

फ़रीदाबाद (म.मो.) सरकारी मेडिकल कॉलेज होने के नाते एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव के आश्वासन के आधार पर, तमाम कमियां होने के बावजूद नेशनल मेडिकल कमिशन (एनएमसी) ने यहां एमबीबीएस के लिये 100 छात्रों के दाखिले की अनुमति दे दी है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार छात्रों को पढ़ाने के लिये यहां जरूरत के हिसाब से केवल एक चौथाई फेकल्टी ही मौजूद है। कुछ माह पूर्व सरकार ने साक्षात्कार के आधार पर करीब 100 डॉक्टरों को भर्ती किया था। लेकिन यहां की सेवा शर्तें व खस्ता हाल माहौल को देख कर चंद डॉक्टरों ने ही यहां नौकरी करना स्वीकार किया। आज के जमाने में जिस अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज में वातानूकूलन की व्यवस्था ही न हो तो वहां भला कौन डॉक्टर नौकरी करना चाहेगा? आज के जमाने में जब पुलिस चौकी तक में एसी लगा हो और मेडिकल कॉलेज में इसे न पाकर तो डॉक्टर का माथा ठनकेगा ही।

बिजली आपूर्ति की भी कोई उचित व्यवस्था नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र में बने इस अस्पताल की सप्लाई जिस फीडर से होती है, उस पर अत्यधिक कट लगते रहते हैं। शहर में चल रहे बीके जैसे अस्पताल को भी विशेष हॉट लाईन से बिजली दी जाने के बावजूद अक्सर वहां इसका संकट बना रहता है। मेडिकल कॉलेज होने के बावजूद यहां डीजल जनरेटर सेट की कोई पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।

बेशक इस मेडिकल कॉलेज अस्पताल ने 16 जुलाई को ओपीडी सेवायें देनी शुरू कर दी थी, परन्तु वहां के डायरेक्टर गौतम गोले यह नहीं बताते कि गांव-गांव में प्रचार करने के बावजूद उनकी ओपीडी में कितने मरीज अब तक आये। जानकार बताते हैं कि दिन भर में बमुश्किल 10-20 भूले-भटके मरीज यहां आ जाते हैं। इनमें से भी अधिकांश को बीके अस्पताल का रास्ता दिखा दिया जाता है, जो इन्हें पहले से ही मालूम होता है। किसी भी अस्पताल में सर्वप्रथम सेवा कैजुअल्टी तथा प्रसव की होती है जो अब तक यहां नहीं है।

राज्य भर के तमाम सरकारी मेडिकल कॉलेजों की फेकल्टी के तबादलों पर हाईकोर्ट ने रोक लगा कर खट्टर सरकार की मुसीबत को और बढा दिया है। विदित है कि जब नूंह का मेडिकल कॉलेज खुला था तो रोहतक मेडिकल कॉलेज तथा ज़िलों में तैनात विशेषज्ञ डॉक्टरों को फेकल्टी बना कर वहां भेज दिया गया था। फरीदाबाद के मौजूदा सिविल सर्जन डॉ. विनय गुप्ता भी दो-तीन साल वहां फेकल्टी रह चुके हैं। सरकार की इस नीति के विरुद्ध डॉक्टर अदालत चले गये और इस तरह के तबादलों पर रोक लगवा दी। जाहिर है यहां के लिये अब फेकल्टी भर्ती करनी ही पड़ेगी।

जो भी हो, जैसे भी हो 100 छात्र तो इस वर्ष यहां दाखिला ले ही लेंगे। वे क्या पढ़ेंगे और कौन पढ़ायेगा यह सब श्री रामजी के भरोसे है। ऐसे में कैसे डॉक्टर बनकर यहां से निकलेंगे, समय ही बतायेगा।

सीवर लाइन चलती नहीं और पेयजल लाइन टिकती नहीं

फ़रीदाबाद (म.मो.) क्या अजीब संयोग है शहर की सीवर लाइन चलने की बजाय जाम रहती हैं और गंदा पानी सड़कों पर बहता है। दूसरी ओर शुद्ध पेयजल लाने वाली पाइप लाईन टिकती नहीं हैं; साल में दो-चार बार तो ये लाइन कहीं न कहीं क्षतिग्रस्त होती रहती हैं और पानी सड़कों पर बह जाता है। यानी कि एक कीचड़ गंदे पानी का तो दूसरा कीचड़ शुद्ध पानी का झेलना नगरवासियों की नियति बन चुकी है।

इसी सप्ताह रैनीवैल से आने वाली पेयजल पाइप लाइन नम्बर पांच जिसकी अभी कुछ दिन पहले ही मरम्मत की गई थी, बीते सोमवार को फ़िर से फट गई। इसके चलते जहां एक ओर शहर के कई हिस्सों में पेयजल का संकट खड़ा हो गया और वहीं दूसरी तरफ़ ददसिया गांव के खेतों में पानी भर गया। पेयजल संकट का लाभ उठाते हुए धंधेबाज टैंकर चालकों ने पानी के दाम बढ़ा दिये। सामन्यत: जो टैंकर 700 रुपये का मिलता था वह 1000 रुपये का हो गया।

सीवर लाइनों के जाम रहने तथा पेयजल पाइप लाइनों के फटने के पीछे एक मात्र कारण भ्रष्टाचार व सिफ़ारिश के आधार पर भर्ती किये गये नालायक व अनपढ़ इंजीनियर हैं।

शराब माफिया टंडन के इशारों पर एसडीएम चहल औलादों से तंग बुजुर्ग को सिर्फ तारीखें दे रहे हैं

फ़रीदाबाद (म.मो.) बुजुर्गों को उनकी उम्र के आखिरी पड़ाव में उनकी अपनी औलादों द्वारा प्रताड़ित किये जाने से बचाने के लिये सरकार ने सामान्य सिविल कोर्ट की बजाय विशेष ट्रिब्यूनलों का गठन किया है। इनके चेयरमैन एसडीएम तथा दो प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता इनके सदस्य होते हैं। निर्धारित नियमों के अनुसार सप्ताह-सप्ताह की तारीखें लगा कर तीन माह के अंदर-अंदर ट्रिब्यूनल को केस निपटाना होता है।

फरीदाबाद के एसडीएम चहल तमाम नियमों को ताक पर रख कर 73 वर्षीय जोगिंदर कुमार यादव निवासी मकान नम्बर 301 सेक्टर 15 फ़रीदाबाद को चक्कर पर चक्कर लगवाये जा रहे हैं। इस बुजुर्ग ने अपने दो पुत्रों बसंत यादव तथा विनोद यादव तथा इनकी पत्नियों द्वारा बूरी तरह से प्रताड़ित होने व उनके हाथों पिटने के बाद 20 मई 2022 को एसडीएम के उक्त ट्रिब्यूनल में राहत के लिये अपना केस दायर किया। बुजुर्ग जोगिन्दर यादव की मांग केवल इतनी है कि उसके अपने जरखरीद मकान नम्बर 301 से उसके पुत्रों व उनकी पत्नियों को बेदखल किया जाय।

उक्त मकान जोगिन्दर यादव ने अपने पैसों से खरीद कर अपना पैसा लगा कर खुद बनवाया था। इस नाते वह खुद इस मकान का मालिक व काबिज है। अपने पुत्रों को उन्होंने अपनी इच्छानुसार घर के प्रथम व द्वितीय तल पर रहने की इजाजत

पीड़ित बुजुर्ग जोगिन्द्र यादव

उस वक्त दी थी जब वे उसका आदर सम्मान करते थे। लेकिन आज के हालात में वे लोग इस मकान में रहने के लायक नहीं रहे। उनके दुर्व्यवहार एवं धमकियों के चलते बुजुर्ग को हर वक्त अपनी जान का खतरा बना रहता है।

एक रात तो इन लोगों ने बुजुर्ग के घर के लोहे के दरवाजे को छेनी-हथौड़ी से तोड़ कर इनके घर में ही प्रवेश कर लिया। मजे की बात तो यह है कि दोनों पुत्र तो ऊपर अपने-अपने घरों में चले गये और दोनों बहुयें बुजुर्ग के ड्राइंग रूम में सोफ़ों पर ही आकर सो गई। बुजुर्ग सारी रात यह सोच कर डरता रहा कि न जाने कब ये दोनों उन पर कोई बेहूदा आरोप न जड़ दें। अल सुबह उन्होंने 100 नम्बर पर पुलिस को फोन किया तो वे इन सब को जिप्सी में बैठा कर पुलिस चौकी सेक्टर 15 ले गये। वहां शराब माफिया तनेन्दर टंडन तो पहले से ही मौजूद था। विदित है कि टंडन पुलिस वालों की दलाली करने के लिये शहर भर में बदनाम है। जाहिर है कि ऐसे में पुलिस ने तो कुछ करना कराना नहीं था, सो दोनों पक्ष घर वापस लौट आये। घर आते ही बेटों और बहुओ ने बुजुर्ग की अच्छी खबर ली।

इन सब हालात से तंग आकर ही बुजुर्ग को ट्रिब्यूनल की शरण में जाना पड़ा था। मामले का मजाक उड़ाते हुए तथा बुजुर्ग को परेशान करने के लिये एसडीएम ने तारीख पर तारीख देने का सिलसिला शुरू कर दिया। 20 मई के बाद 22 जुलाई, 10 अगस्त, 25 अगस्त और अब 21 सितम्बर लगा दी गई है। इस बीच, बीते सप्ताह बुजुर्ग ने शीघ्र सुनवाई की दरखास्त एसडीएम को पेश की तो उनका कड़कड़ाता जवाब था, 'क्या मैं इसी काम के लिये बैठा हूं, मुझे और कोई काम नहीं है क्या?'

तारीखों पर आती-जाती बहुओं को आपस में बात करते बुजुर्ग के नाती विशाल ने यह कहते हुये सुन लिया कि टंडन तथा विजय प्रताप की तो यहां खूब अच्छी चलती है। यह भी पता चला है कि टंडन ने ही एक बार बुजुर्ग के बेटों को उक्त विजय प्रताप से उस वक्त मिलवाया था, जब वह बडखल विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहा था। इस बाबत विजय प्रताप का पक्ष जानने के लिये उन्हें फोन किया गया तो उन्होंने फोन नहीं उठाया।

ईएसआई मेडिकल कॉलेज की ओपीडी हुई 4500 के पार, स्टाफ़ का कार्यभार बढ़ा

फ़रीदाबाद (म.मो.) सर्वविदित है कि मेडिकल कॉलेज का अस्पताल प्राथमिक सेवायें देने के लिये नहीं होता। यह केवल बड़ी गंभीर तथा अति विशिष्ट चिकित्सा सेवायें देने के लिये होता है। प्राथमिक सेवाओं के लिये ज़िले भर में 15 डिस्पेंसरियां व एक अस्पताल सेक्टर आठ में स्थापित है। इसी गणित के आधार पर यहां 1000-1500 ओपीडी की अपेक्षा की गई थी। इसी सम्भावना के आधार पर यहां दवा वितरण के 5 काऊंटर बनाये गये थे।

दवा लेने के लिये मरीजों को बार-बार दूर-दराज से चलकर यहां न आना पड़े इसके लिये माना गया था कि आवश्यक दवायें तमाम 15 ईएसआई डिस्पेंसरियों से मिल जायेंगी। लेकिन उक्त डिस्पेंसरियों तथा सेक्टर आठ के अस्पताल से संतोषजनक इलाज व दवायें आदि न मिल पाने के कारण सारा बोझ इसी मेडिकल कॉलेज अस्पताल पर आन पड़ा। मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुये दवा वितरण काऊंटरों की संख्या बढ़ा कर 9 कर दी गई है। इसके बावजूद भी प्रात: साढे आठ बजे से लगी मरीजों की

लाइन शाम के सात बजे तक भी खत्म नहीं होती जबकि अस्पताल का समय प्रात: 9 से शाम 4 बजे तक ही होता है। जाहिर है कि ऐसे में दवा वितरण करने वाले स्टाफ़ का कार्यभार अत्यधिक बढ़ गया है।

काऊंटरों से मरीजों को दवा देने वाले कर्मचारियों की एक और मुसीबत यह है कि बार-बार ऊंचा बोल कर, उन्हें मरीजों को समझाना पड़ता है कि दवाईयां किस-किस टाईम पर कैसे-कैसे लेनी होंगी। कई मरीज़ों को तो यही बात समझाने के लिये कई बार बताना पड़ता है। जाहिर है जो कर्मचारी सुबह से शाम तक 100-150 मरीजों से झख मारेगा उसका गला तो वैसे ही जवाब दे जायेगा और चिड़चिड़ा भी हो जायेगा। ऐसे में अस्पताल प्रशासन अधिक नहीं कुछ तो इन काऊंटरों पर माइक तो लगवा ही सकता है जिससे कि उन्हें ऊंचा न बोलना पड़े। ऐसी सुविधा एम्स के तमाम काऊंटरों के अलावा रेलवे इन्क्वायरी खिड़की पर हैं। यह सुविधा दवा वितरण काऊंटरों के अलावा, भीड़ वाले अन्य काऊंटरों पर भी दी जानी चाहिये।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।